भूमिका

इस भूतल पर अपना अस्तित्व बनाये रखनेवाले प्रत्येक प्रदेश को, एक 'निजी' संस्कृति तथा उस संस्कृति में परंपरा से समाया हुआ 'स्वतंत्र' संगीत है | अतः हर एक संस्कृति का संगीत 'विशिष्ठ' होकर, उस संस्कृति से जुड़े समाज को 'सम्मोहित' करनेवाला होता है | परंतु प्रत्येक संस्कृति या समाज की, कालानुसार, वैचारिक धारा परिवर्तित होती रहती है वैसे उसमे निहित 'संगीत' में आया हुआ बदलाव भी अपरिहार्य होकर, कुछ संगीत शैलियाँ लुप्त होती है तथा कुछ नयी शैलियाँ उभर आती है | हमारे भारत देश में ही भिन्न भिन्न प्रांतानुसार भिन्न भिन्न प्रकार का संगीत विद्यमान है; फिर भी पूरे विश्व में भारत की 'पहचान' बनाएँ रखनेवाला 'अभिजात शास्त्रीय संगीत' अनन्य है | इस अभिजात शास्त्रीय संगीतान्तर्गत अनेक गायन विधाएँ जैसे – ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, तराना, चतरंग आदि; 'शब्दों' का समावेश होते हुए भी 'स्वर एवं लय' प्रधान मानी जाती है | जहाँ ठुमरी, गजल या भजन जैसी विधाएँ 'शब्द' प्रधान मानी जाती है; जिसका आम जनता सहजता से अंगिकार करती है | अतः शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में, श्रेष्ठ कलाकारों द्वारा गाया गया 'भजन' या 'भक्तिसंगीत' प्रकार, श्रोताओं के मन पर विशेष छवि निर्माण करता है; यह शैशव काल से अपने पिता के साथ अनेक मंच प्रदर्शनों में उपस्थित रहकर, शास्त्रीय संगीत के 'रागगायन' के पश्चात कई बार, कलाकारों द्वारा 'भक्तिसंगीत' प्रकार की शुरुआत करनेपर, अधिकतर श्रोताओं द्वारा 'तक्षण' अभिव्यक्त होनेवाली 'खुशी' की प्रतिक्रिया को महसूस करनेवाली इस जिज्ञासा के कारण, विषयान्तर्गत अध्ययन करनेकी प्रेरणा शोधार्थी को मिली और शैशव काल के इस विचार को स्थायी रखते हुए,

"स्वातंत्र्योंत्तर काल में उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत गायकोंका भक्ति संगीत में योगदान – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" इस विषय पर अपना शोध प्रबंध लिखनेके धारणा की शोधार्थी ने समयोचित पुष्टि की | शोधार्थी द्वारा विषय का चयन होते ही, उसे 'रिसर्च मेथड़ोलोजी' के विविध आयामों में ढालकर, उसके संदर्भ में अध्ययन करके 'तथ्यों' को उजागर करनेका प्रयास इस शोध प्रबंध में किया गया है |

इस विषय के अभ्यास हेतु, विषय संबंधी अनेक विद्वान, प्रतिष्ठित व्यक्तियों से साक्षात्कार करनेका अवसर प्राप्त हुआ, जिससे शोधार्थी के ज्ञान की अभिवृद्धि हुई | इस शोध प्रबंध से प्राप्त हुए तथ्यों से विद्यार्थी, अध्यापक एवं संगीत रसिक जरूर लाभान्वित होंगे; उससे अधिक, कई सालों से अपने मन में ठाने हुए इस विषय की शोधयात्रा में, मार्गदर्शक गुरु, पारिवारिक सदस्य एवं सभी शुभचिंतकों के सहकार से मिली 'आनंदानुभूति' शोधार्थी के लिए सदा संस्मरणीय रहेगी |